International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume XI, Issue III, May – June 2024 **Available online at: www.ijaur.com**
Impact Factor- 5.991

पशुओं पर आपदाओं के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. उमेश प्रसाद पटेल
अतिथि विद्वान, प्राणिशास्त्र विभाग
शासकीय स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय त्योंथर, रीवा (म.प्र.)

सारांश : मनुष्यों की तरह ही जानवरों को भी मानवजनित और प्राकृतिक आपदाओं के परिणामस्वरूप बीमारी, चोट और मृत्यु जैसे नुकसान होने का खतरा होता है। जानवरों को जोखिम का सामना करना पड़ता है और वे आपदाओं से प्रतिकूल रूप से प्रभावित होते हैं, इसलिए जब आपदा आती है तो उन्हें मानवीय और सम्मानजनक देखभाल की आवश्यकता होती है, क्योंकि मानव समुदाय उनके नैतिक स्थिति और कार्य का मूल्यांकन और मूल्यांकन कैसे करते हैं, इस पर आधारित सामाजिक रूप से स्थित कमजोरियाँ होती हैं। आपदा जोखिम और प्रबंधन प्रथाओं और प्रक्रियाओं में जानवरों को एकीकृत करने में असमर्थता कभी–कभी आपदा प्रबंधन कार्यक्रमों को डिजाइन करते समय पशु नैतिकता और पशु स्वास्थ्य और कल्याण की आवश्यकता के बारे में समझ की कमी से जुड़ी हो सकती है। यह अध्याय आपदा प्रबंधन के लिए जानवरों के प्रति मानवीय जिम्मेदारी की फिर से कल्पना करना चाहता है। आपदाओं की व्यापकता और जानवरों पर उनके प्रभाव, मानव–पशु और पशु–पर्यावरण संबंध ध्वनि नैतिक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं द्वारा समर्थित प्रभावी पशु आपदा प्रबंधन के महत्व को रेखांकित करते हैं। इस उद्देश्य के लिए, हम आपदा प्रबंधन योजनाओं और नीतियों को विकसित करते समय विचार करने के लिए छह नैतिक रूप से जिम्मेदार पशु देखभाल उद्देश्यों को रेखांकित करते हैं। ये उद्देश्य, जो आपदाओं के दौरान पालतू पशुओं द्वारा अनुभव की जाने वाली केंद्रीय कमजोरियों को संबोधित करते हैं, आपदा प्रबंधन के संदर्भ में कार्रवाई का मार्गदर्शन करने के लिए हैं। उनमें शामिल हैं: (1) जीवन बचाना और नुकसान को कम करना (2) पशु कल्याण की रक्षा करना और पशुओं के अनुभवों का सम्मान करना (3) वितरणात्मक न्याय का पालन करना, पहचानना और बढ़ावा देना (4) सार्वजनिक भागीदारी को आगे बढ़ाना (5) देखभाल करने वालों, अभिभावकों, मालिकों और समुदाय के सदस्यों को सशक्त बनाना (6) बहु–विषयक टीमों और लागू वैज्ञानिक विकास में संलग्नता सहित सार्वजनिक स्वास्थ्य और पशु चिकित्सा समुदाय की व्यावसायिकता को मजबूत करना। इन उद्देश्यों को लाने के लिए, हम पशु देखभाल करने वालों और आपदा प्रबंधन टीमों के लिए व्यावहारिक और सीधे कार्रवाई चरणों का एक सेट प्रदान करते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि आपदा प्रबंधन में पशुओं के हितों को व्यवस्थित रूप से बढ़ावा दिया जाए।

मुख्य शब्द :– आपदाएँ, पशु, आजीविका एवं रक्षा।

प्रस्तावना :–

आपदाएँ पशुओं को कई तरह से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। पशुओं पर आपदाओं का सीधा प्रभाव दिखाई देता है और समुदाय की सामना करने की क्षमता को प्रभावित करता है, उन्हें मात्राबद्ध किया जा सकता है और उचित रूप से रिपोर्ट किया जा सकता है। भारत में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के अनुसार बाढ़ के कारण हर साल 94,830 मवेशी मर जाते हैं, पशुओं पर अन्य आपदाओं का प्रभाव भी बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन रिपोर्ट नहीं किया जाता है। अप्रत्यक्ष नुकसान अक्सर छिपे होते हैं और दिखाई नहीं देते हैं, लेकिन वे लंबे समय तक चलने वाले प्रभाव पैदा कर सकते हैं, जिन्हें मापना बहुत चुनौतीपूर्ण होता है और समुदाय की पुनर्प्राप्ति प्रक्रिया में देरी हो सकती है। यह पशुधन मालिकों के लिए प्रत्यक्ष नुकसान जितना ही घातक है क्योंकि ज्यादातर मामलों में पशु अनुत्पादक या बीमार हो जाते हैं और मालिकों के लिए अपने पशुओं और उनकी आजीविका की रक्षा करना बहुत मुश्किल हो जाता है।

आपदा प्रबंधन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम बड़ी विफलताओं के लिए तैयारी करते हैं, उनका जवाब देते हैं और उनके प्रभावों से सीखते हैं। आपदा प्रबंधन वह तरीका है जिससे हम उक्त आपदा के मानवीय, भौतिक, आर्थिक या पर्यावरणीय प्रभावों से निपटते हैं। यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम "बड़ी असफलताओं के प्रभावों से सीखते हैं।" हालाँकि अक्सर ये असफलताएँ प्रकृति के कारण होती हैं, लेकिन कभी–कभी मनुष्य भी इसके लिए दोषी हो सकता है। भारत सरकार ने पशुओं के लिए एक व्यापक राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन रणनीति का अनावरण किया है। योजना के अनुसार, पशुओं के लिए खोज और बचाव प्रयासों को अब से पूरे देश में आपदा राहत प्रयासों का एक अनिवार्य घटक माना जाएगा। योजना यह सुनिश्चित करती है कि पहली बार आपदा तैयारियों में पशुओं को शामिल किया जाएगा, जिससे लाखों पशुओं के जीवन को बचाने और उन पर निर्भर समुदायों की लचीलापन को मजबूत करने की क्षमता है।

पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन विभाग डी.एम.पी. तैयार करने के लिए जिम्मेदार है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन योजना (डीएमपी) को राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, राष्ट्रीय आपदा

प्रतिक्रिया बल, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान, साथ ही कई राज्य सरकारों और ज्ञान संस्थानों सहित विभिन्न हितधारकों के साथ व्यापक परामर्श और गहन चर्चा के बाद विकसित किया गया था। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान (एनआईडीएम), विश्व पशु संरक्षण और पॉलिसी पर्सपेक्टिव्स फाउंडेशन ने एक सहयोगात्मक प्रयास (पीपीएफ) के रूप में इस योजना को विकसित करने के लिए एक साथ काम किया है।

अनुभव से पता चला है कि समुदाय के आर्थिक और सामाजिक रूप से हाशिए पर पड़े वर्गों पर आपदाओं की संवेदनशीलता और प्रभाव अधिक है। भूमि सीमित होने के कारण सीमांत किसानों और भूमिहीन लोगों की संख्या हर साल बढ़ रही है। यह वर्ग मोटे तौर पर अपनी आजीविका के लिए जानवरों पर निर्भर करता है। इसलिए जानवरों के आपदा प्रबंधन की दिशा में कदम आपदा की रोकथाम और शमन का दोहरा प्रभाव डालते हैं। चाहे वह अफ्रीका के ष्मसाईष् हों या भारत के ष्गुज्जर, बखरवाल या रायकाष् हों, दुनिया में बड़ी संख्या में खानाबदोश हैं जो मोटे तौर पर अपनी आजीविका के लिए जानवरों पर निर्भर हैं। पशु एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक तत्व बन गए हैं, जो मनुष्य की पारंपरिक जीवन शैली को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। उदाहरण के लिए याक ने मनुष्यों के लिए कठोर क्षेत्रों में रहना संभव बना दिया है जहाँ फसलों का उत्पादन लगभग असंभव है। पशु आनुवंशिक जैव विविधता ने मनुष्यों को पर्यावरण की एक विस्तृत श्रृंखला में जीवित रहने में मदद की है। कई विकासशील देश बड़े पैमाने पर आपदा प्रवण हैं।

भारत के 32 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में से 22 किसी न किसी आपदा के प्रति संवेदनशील हैं। 14 से 20 नवंबर, 1977 के बीच आंध्र प्रदेश में आए चक्रवात से 2,30,146 मवेशियों और 3,44,056 अन्य पशुओं की अनुमानित हानि हुई, जबकि 8,515 लोगों की मृत्यु हुई। इसी प्रकार 4 जून, 1982 को उड़ीसा (भारत में) में आए चक्रवात से 11,468 मवेशियों की मृत्यु हुई, जबकि 243 लोगों की मृत्यु हुई (अन्य पशुओं की हानि का अनुमान नहीं लगाया जा रहा है)। भूकंप का पशुओं पर तुलनात्मक रूप से कम प्रभाव पड़ता हैय लेकिन भारत के उत्तरकाशी भूकंप में 770 लोगों की जान के मुकाबले 3100 मवेशियों की मृत्यु हुई। 1953–1990 के बीच भूकंप के कारण 1,02,905 मवेशियों की मृत्यु हुई, जबकि 1532 लोगों की जान गई। यह स्पष्ट है कि यद्यपि पशु सबसे गरीब लोगों और भूमिहीनों की आजीविका का मुख्य स्रोत हैं, फिर भी पशुधन और अन्य पशुओं के आपदा प्रबंधन की दिशा में ठोस कदम अभी तक नहीं उठाए गए हैं।

भारत में 70ः पशुधन का स्वामित्व 67ः छोटे और सीमांत किसानों और भूमिहीन लोगों के पास है। संकट में जी रहे छोटे धारक लगभग बिना किसी पूंजी संसाधन या प्रशिक्षण के समुदाय के लिए दूध, मांस, ऊन आदि का उत्पादन करते हैंय लेकिन वे विकासशील देशों के सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। भारत में ये लोग कुल खरीदे गए दूध का 62ः योगदान देते हैं। पशुपालन में 60ः श्रम महिलाओं द्वारा प्रदान किया जाता है और पशुओं की देखभाल से संबंधित 90ः से अधिक कार्य परिवार की महिलाओं द्वारा किया जाता है।

विश्लेषण :–

यह माना जाता है कि पशु किसी संभावित आपदा की पूर्व चेतावनी दे सकते हैं। (कुछ खतरों तक सीमितय पूरी तरह से सिद्ध नहीं) कुत्तों जैसे पशुओं का उपयोग खोज और बचाव कार्यों के लिए किया जाता है। अचानक आई बाढ़ के दौरान लोग पशुओं को पकड़कर भागते हैंय सभी पशु स्वाभाविक रूप से तैराक होते हैं। जब कोई अन्य परिवहन संभव नहीं होता है, तो पशु और पशु–चालित गाड़ियाँ घायल और अशक्त लोगों के परिवहन का उपलब्ध साधन होते हैं। पशुओं का उपयोग मलबे को साफ करने के लिए भी किया जाता है।

आपदा के दौरान लोग अपनी संपत्ति और आजीविका खो देते हैं। फसलों, बुनियादी ढांचे या मशीनरी के नुकसान की भरपाई में समय लगता है। यदि पशुओं को बचाया जाए तो वे समुदाय को भोजन, ऊर्जा, परिवहन और अन्य उपयोगिताएँ तुरंत प्रदान कर सकते हैं (जब तक वे स्वस्थ हैं और उनकी देखभाल की जाती है)। खड़ी फसलों या बुनियादी ढांचे के विपरीत, पशुओं को बचाया जा सकता है और सुरक्षित स्थानों पर लाया जा सकता है, जहाँ आपदा का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। पारगमन शिविरों या पुनर्वासित आवासों में भी पशुओं का उपयोग दूध, खाद, परिवहन, ईंधन (गोबर के उपले) के लिए किया जा सकता है। जानवरों का उपयोग पानी लाने या जल स्रोतों से पानी उठाने के लिए किया जाता है, जहाँ मशीन या मानव शक्ति उपलब्ध नहीं है या उनका उपयोग नहीं किया जा सकता है। अपनी मृत्यु के बाद भी जानवर समुदाय की सेवा करते हैंय वे अपनी खाल, हड्डी और शव के माध्यम से कुछ भौतिक लाभ प्रदान करते हैं। आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त फसलें और मानव उपभोग के लिए अनुपयुक्त अनाज का उपयोग पशु आहार के रूप में लाभकारी रूप से किया जा सकता है। चूँकि जानवरों की देखभाल में महिलाओं और बच्चों की प्रमुख भागीदारी होती है, इसलिए यह गतिविधि आपदा के दौरान पीड़ितों पर पड़ने वाले उदासी और अवसाद को दूर करने के लिए एक बड़ा मोड़ हो सकती है।

पशुओं के लिए आपदा प्रबंधन योजना–

विकासशील देशों में पशुओं के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय महत्व और उन पर निर्भर छोटे धारकों की जीवन प्रणाली को ध्यान में रखते हुए, किसी को पशु आपदा प्रबंधन (उस प्रकाश में) पर विचार करना पड़ सकता है। जानवरों के लिए एक आपदा प्रबंधन योजना में अनिवार्य रूप से शामिल होंगे :

(1) क्षेत्र में आपदाओं का पूर्वव्यापी महामारी विज्ञान अध्ययन और इसमें शामिल होंगे, –

(ए) डेटा एकत्र, व्याख्या और विश्लेषण (यानी सूचना), जिसके आधार पर कुछ भविष्यवाणी की जा सकती है।

(बी) आपदा विग्नेटिंगरू एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा घटना आवृत्ति परिमाण, उपरिकेंद्र, कमजोर क्षेत्रों के आधार पर मानचित्रण किया जाता है।

(सी) झुंड प्रोफाइलरू कुल पशु आबादी (झुंड संख्या), उनकी प्रजाति, नस्ल, उम्र, लिंग आदि के अनुसार कमजोर पशु आबादी।

सामुदायिक प्रोफाइल, कुल जनसंख्या, पशु मालिक आबादी उनकी उम्र, लिंग, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शिक्षा, सांस्कृतिक वितरण (ई) जोखिम कारक विश्लेषणरू जोखिम के प्रकार का विश्लेषण (पहचान और विश्लेषण) है (2) कार्य योजनारू चूंकि आपदा के बाद, जानवरों को बचाया जाना है और राहत शिविरों में एकत्र किया जाना है, तत्काल प्राथमिकता बीमारी को नियंत्रित करना और उसका मुकाबला करना होगा। आपदा न्यूनीकरण के पशु स्वास्थ्य घटक में शामिल होंगे (ए) प्रचारात्मक झुंड स्वास्थ्य देखभाल जैसे पोषण, गर्भवती पशु देखभाल, नवजात और युवा पशु की देखभाल आदि। (बी) जोखिम की रोकथाम टीकाकरण, कीट ध वेक्टर, नियंत्रण, स्वच्छता आदि के माध्यम से है। (सी) प्रारंभिक निदान और उपचार के माध्यम से विशिष्ट चिकित्सा। (डी) पुनर्वासरू जानवरों को किसी भी आघात या डर से उबरने में मदद करें। (ई) मृत जानवरों का निपटानरू शव का उपयोग एक तरीका है। कई जानवर जिनमें उपचार के लाभकारी होने की संभावना नहीं है उन्हें सोने के लिए रखा जा सकता है (ख) स्टोर और उपकरणों में दवा, शल्य चिकित्सा और चिकित्सा उपकरण, निदान, जीवन रक्षक उपकरण आदि शामिल हैं। रसद संबंधी जरूरतेंरू अर्थात् ईंधन, प्रकाश उपकरण, टेंट, शेड, घास बिस्तर, ट्रॉलियां, सफाई के लिए सामग्री, चारा और पानी का भंडारण। (घ) एम्बुलेंस और आउट रीच सुविधारू पशुओं को ले जाना तब अधिक बोझिल होता है जब वे बीमार, घायल और चलने–फिरने में असमर्थ होते हैं। (ङ) पशु चिकित्सा सुविधाएं जैसे पशु चिकित्सालय, मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयां आदि। चराई और पानी की सुविधा। (4) प्रशिक्षण योजना (क) पशु चिकित्सा कर्मियों, पैरावेट्स, परिचारकों आदि को प्रशिक्षण देना।

घटनाओं के क्रम का पूर्वानुमानः–

मृत्यु और हताहतों की संख्या में अचानक वृद्धि से पशु चिकित्सा कर्मियों की मांग बढ़ेगी। इसलिए प्रारंभिक राहत अवधि महत्वपूर्ण होगी। यहां प्रत्येक आपदा की स्थिति में पशु व्यवहार को समझना महत्वपूर्ण है। बचाव, राहत और क्षति के आकलन में पशु संसाधन की जानकारी का महत्व समान रूप से महत्वपूर्ण है। जैसा कि चर्चा की गई है कि कुल पशु आबादी (झुंड संख्या) को दर्शाने वाले झुंड का प्रोफाइल, उनकी प्रजाति, नस्ल, उम्र, लिंग आदि के अनुसार कमजोर पशु आबादी खोज, बचाव, राहत और पुनर्वास सहित शमन में काफी मदद करेगी।

लेकिन जैसे–जैसे समय बीतता जाएगा, बीमारियों का खतरा भी बढ़ता जाएगा। प्रभावित जानवर तनाव में हैं, अपर्याप्त रूप से प्रबंधित हैं और राहत शिविरों में रखे गए हैं, जैसे–जैसे दिन बीतते जाएंगे, उनकी कमजोरी बढ़ती जाएगी। अस्थायी शिविरों या शेडों को भी उन सुविधाओं की आवश्यकता होगी जो पहले मौजूद नहीं थीं।

पशुचिकित्सा आपदा प्रबंधन सुविधा के भौतिक घटकः–

अस्थायी पशु चिकित्सालय :–

आपातकालीन उपकरणों, उपकरणों और दवाओं के भंडार के साथ उपकरण और अन्य बुनियादी ढाँचे उपलब्ध कराए जाते हैं। सभी पशु चिकित्सा कर्मियों को एक समय में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है। मानसिक और शारीरिक थकान से बचने के लिए शिफ्ट की योजना बनाना महत्वपूर्ण होगा। शुरुआती चरणों में अधिक कार्यबल की आवश्यकता होगी और गतिविधि के सभी विभागों में सर्जन, एनेस्थेसियोलॉजिस्ट (दर्द प्रबंधक), निदानकर्ता जैसे विशेषज्ञों के साथ–साथ पैरावेटरनरी कर्मियों और शारीरिक कार्यकर्ताओं जैसे टास्क फोर्स की आवश्यकता होगी। पर्यवेक्षण और निगरानी महत्वपूर्ण होगी और नेतृत्व के सभी गुणों (जैसे आत्मविश्वास, क्षमता, अनुभव, धैर्य, संचार कौशल आदि) की मांग करेगी। जैसे–जैसे खोज और बचाव समाप्त होगा, राहत और पुनर्वास महत्वपूर्ण हो जाएगा।

पुनर्बहाली और पुनर्वासः–

आपदा का प्रभाव बहुत ही भयानक होता है, ऐसे कई मामले सामने आ सकते हैं जो केवल शारीरिक चोटों या संक्रामक बीमारी से परे होते हैं। भाई–बहन या साथी को खोने के कारण मानसिक आघात, जहाँ बैलों को जोड़े में इस्तेमाल किया जाता

है, का सामना करना पड़ सकता है और इसे उचित चरण में संभालना होगा। व्यापक आघात के कई मामले जिन्हें संभाला नहीं जा सकता है, उन्हें शांत करना पड़ सकता है (दया हत्या)। ऐसा पूरी तरह से सार्वजनिक रूप से करना, जहाँ लोग पहले से ही जान और संपत्ति के नुकसान से परेशान हैं, अवसाद या सार्वजनिक आक्रोश पैदा कर सकता है। अति उत्साही और खराब प्रशिक्षित पशु कार्यकर्ता अक्सर चीजों को अनुपात से बाहर कर देते हैं, खासकर इसलिए क्योंकि भारत के कई हिस्सों में कुछ जानवरों के साथ धार्मिक भावनाएँ जुड़ी हुई हैं। ऐसी स्थितियों को शांत करने के लिए पशु चिकित्सा विस्तार विशेषज्ञों की भूमिका होती है।

नियंत्रण कक्ष :–

पशु चिकित्सा सहायता के बारे में सूचनाओं के आदान–प्रदान और समन्वय के लिए नियंत्रण कक्षों का उपयोग किया जाता है। ये पशुपालन निदेशालय, जिला पशु चिकित्सालयों, प्रभावित क्षेत्र के ग्रामीण अस्पतालों आदि के बीच समन्वय की सूचनाओं को संभालते हैं। नियंत्रण कक्ष एजेंसियों से संपर्क बनाए रखते हैं और आपूर्ति का समन्वय करते हैं। नियंत्रण कक्ष प्रभावित क्षेत्र से आपातकाल की सीमा और प्रकृति, विशेष उपकरणों की आवश्यकता, आपातकालीन उपकरणों (दर्द निवारक, शामक, एंटीबायोटिक, फ्रैक्चर उपकरण आदि) के बारे में फीडबैक पर काम करेगा। पशु चिकित्सा जनसंपर्क व्यक्ति (वेट पीआर) की भूमिका महत्वपूर्ण है।

रोगों पर नियंत्रणः–

पहली आपात स्थिति के बाद तत्काल कार्य, उपचार पूरा हो जाने के बाद फैलने वाली बीमारियों की देखभाल करना होगा। चूंकि भारत के कई क्षेत्रों में पशु–भोजन ग्रामीण जीवन का हिस्सा है, इसलिए पशुपालन के कई राज्य विभागों में "स्वास्थ्य देखभाल सावधानियां" और "रोग नियंत्रण" कार्यक्रम पहले से ही उपलब्ध हैं। राजस्थान के "पुष्कर मेला" और राज्य और क्षेत्रीय पशु शो जैसे मेले पहले से ही कई राज्यों में नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं। पूर्वव्यापी महामारी विज्ञान से लैस, अधिकारी आपातकालीन बीमारियों और स्वच्छता उपायों की पहचान करेंगे। इसमें खाद के गड्ढे खोदना, जल निकासी की सुविधा (बाढ़, चक्रवात आदि में अधिक महत्वपूर्ण), पीने का पानी और पानी के कुंड शामिल होंगे। इसे अस्पतालों, अस्थायी आश्रय शिविरों के साथ–साथ प्रभावित क्षेत्रों में समय–समय पर और प्राथमिकता के अनुसार एक साथ स्थापित करना होगा।

स्वास्थ्य देखभाल कार्यों के लिए अनुशासन की आवश्यकता हैय सार्वजनिक सहयोग भी आवश्यक है। क्षेत्रों में काम करने वाली पशु कल्याण एजेंसियां भंडार की व्यवस्था करने में मदद कर सकती हैं। मीडिया क्षेत्र से फीडबैक देकर मदद कर सकता है।

सहायता का चयन और समन्वय करना–

आपदा का एक प्रमुख प्राकृतिक परिणाम है ष्सहानुभूति का अनुचित उपयोगष और बिना यह जाने कि किस चीज की आवश्यकता है, राहत सामग्री को फेंक देना। कुछ कारक जो स्वास्थ्य और पशु चिकित्सा सहायता में बाधा डाल सकते हैं, वे हैं,

(i) अधिकारियों के बीच संवाद की कमी।

(ii) प्रयोगशाला, मेडिकल स्टोर आदि जैसी विभिन्न गतिविधियों के संचालन के लिए स्थान की कमी।

(iii) अतिरिक्त सामग्रियों की अनियंत्रित मांग (यह तब और अधिक होगी जब यह महसूस किया जाएगा कि किसी सामग्री की आपूर्ति कम है)

(iv) अनुचित या अकुशल सामग्री जैसे उपकरण जो बैटरी से संचालित नहीं होते।

(v) चिंता को संभालने के लिए प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी (पशु चिकित्सा विस्तार और जनसंपर्क)।

(vi) देखभाल के बाद की सुविधाओं का अभाव।

(vii) समन्वय में कमी, दोहराव।

(viii) आपदा प्रबंधन के लिए समग्र प्रशिक्षण का अभाव।

आपदा के बाद का चरण और पुनर्निर्माण–

क्षतिग्रस्त या खोई हुई पशु चिकित्सा और स्वास्थ्य सुविधाओं के पुनर्निर्माण के अलावा, आपदा से निपटने के अनुभव से पशुपालन और पशु चिकित्सा सेवाओं में होने वाली कमियों के बारे में भी सीखा जा सकता है। ये अनुभव कुछ क्षतिग्रस्त या खोई हुई सुविधाओं के पुनर्निर्माण में मदद करेंगे। कुछ उपकरण या दवाइयाँ भी प्राथमिकता के अनुसार सूचीबद्ध की जाएँगी।

गोशालाओं की भूमिका–

पशुओं के प्रति भारतीय समुदाय की भावनाओं को देखते हुए, देश में पहले से ही कई गोशालाएँ या पंजरापोल स्थापित हैं। यह परंपरा हजारों साल पुरानी है। 300 ईसा पूर्व में राजा अशोक के शासन के दौरान, चिकित्सा सुविधाओं के साथ–साथ "बनियान अस्पताल" स्थापित किए जाते थे, जहाँ डॉक्टरों को औषधीय जड़ी–बूटियाँ उगाने के लिए जमीन दान करने का अधिकार था।

पशु अपशिष्ट निपटान –

पशु अपशिष्ट निपटानध्रीसाइकिलिंग के तरीके जानवरों के अनुसार अलग–अलग होते हैं। गाय और भैंस के गोबर का उपयोग खाद के रूप में किया जाता है या इसे ईंधन के रूप में उपयोग करने के लिए सुखाया जा सकता है। घोड़े, बकरी और मुर्गी के अपशिष्ट का भी खाद के रूप में उपयोग किया जाता है। जहाँ संभव हो, छोटी खाद गैस (या गोबर गैस) इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं। अनुचित निपटान से कीट या वेक्टर समस्याएँ बढ़ सकती हैं। खाद तैयार करना या खाद के गड्ढे खोदना विचारणीय है। खाद के गड्ढों में नियमित रूप से सूखा कचरा और चूना डालना चाहिए। बाढ़ के पानी के लंबे समय तक स्थिर रहने के दौरान, बत्तख पालन और मछली पालन को कीट नियंत्रण के साधन के रूप में माना जा सकता है।

मृत पशुओं का निपटान –

एक महत्वपूर्ण समस्या है जिसका सामना जानवरों के आपदा प्रबंधन के दौरान करना पड़ता है। यह बाढ़ और चक्रवात के दौरान गंभीर समस्याएँ पैदा करता है, क्योंकि मरने वाले जानवरों की संख्या बहुत ज्यादा होगी। ज्यादातर राज्यों में पशु प्रबंधन कार्यक्रम और शव उपयोग कार्यक्रम में कमी आई है। बेशक, एक प्रशासनिक समूह इनसे समान रूप से नहीं निपटता है।

पशुओं की जनसंख्या और वितरण का विवरण स्पष्ट रूप से तैयार किया जाना चाहिए और चक्रवात और बाढ़ जैसी बड़ी आपदाओं में पशुओं को बचाने और बचाने की योजना इस डेटा के आधार पर बनाई जानी चाहिए। गोशालाओं, डेयरी, एनजीओ और सीबीओ जैसी एजेंसियों को इस तरह से संगठित किया जाना चाहिए कि आपदा प्रबंधन के लिए उनकी सेवाओं का भी कम समय में उपयोग किया जा सके। देश के चक्रवात संभावित क्षेत्रों में पशुओं के लिए विशेष रूप से चक्रवात आश्रय स्थल बनाए जाने चाहिए। सूखे से निपटने के लिए आवश्यक दवाओं और टीकों के साथ–साथ दुर्लभ चारे, पीने के पानी और रियायती भोजन की व्यवस्था जैसे सूखा राहत कार्यक्रम की व्यवस्था की जानी चाहिए।

प्रत्येक राज्य को पशुपालन और पशु चिकित्सा सेवा से संबंधित विभाग में एक आपदा प्रबंधन समूह का गठन करना चाहिए जिसमें विशेष रूप से प्रशिक्षित कर्मचारी, महामारी विज्ञान संबंधी डेटा और संचार सुविधाएं हों। आवश्यक फील्ड स्टाफ को वर्ष के संवेदनशील महीनों में निरंतर तैयार रहना चाहिए। कमजोर अवधि के दौरान, टीम को अपनी प्रभावकारिता और तैयारियों का परीक्षण करने के लिए तैयारी और राहत अभ्यास करना चाहिए। इससे एक सुव्यवस्थित कार्य प्रणाली विकसित करने में मदद मिलेगी। राष्ट्रीय पशु आपदा प्रबंधन से निपटने के लिए केंद्रीय नियंत्रण कक्ष से जुड़ा एक अलग नियंत्रण कक्ष होना चाहिए।

आपदा जोखिम में कमी :

आपदाओं पर प्रतिक्रिया देने के साथ–साथ, हमारे पिछले अभियानों ने यह सुनिश्चित किया कि हम देशों को जानवरों और उनके मालिकों पर प्रभाव को कम करने और तैयार करने में मदद करने के लिए साल भर काम करें। काम के माध्यम से, सरकारों, अंतर्राष्ट्रीय निकायों और स्थानीय और राष्ट्रीय भागीदारों को अपनी योजनाओं, नीतियों और अभ्यास में जानवरों को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया गयज्ञं अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर पशु–समावेशी आपदा जोखिम न्यूनीकरण रणनीतियों की पैरवी की गई और सार्वजनिक रूप से अभियान चलाया गया

निष्कर्ष : –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जानवर अक्सर प्रत्यक्ष रूप से पीड़ित नहीं होते हैं, हालांकि अप्रत्यक्ष रूप से वे कभी भी फंस सकते हैं। भोपाल गैस त्रासदी के दौरान पशुधन सहित कई जानवर प्रभावित हुए थे। कुल मिलाकर जातीय पशु तनाव और बीमारी का सामना कर सकते हैं, हालांकि स्थानिक रोग और कृमि संक्रमण या टिक जैसी पुरानी स्थितियाँ असामान्य नहीं हैं। इसलिए निवारक स्वास्थ्य देखभाल विशेष महत्व रखती है। कुछ राज्यों में संकर पशुओं का प्रतिशत अधिक है, विशेष रूप से मवेशी जिनके स्वास्थ्य के दृष्टिकोण को जातीय पशुओं से स्वतंत्र रूप से विचार करना होगा। यह सुझाव दिया जाता है कि आपदा प्रबंधन के लिए जिम्मेदार देश की नोडल एजेंसी (भारत में यह कृषि मंत्रालय है) को विशेष रूप से पशुओं में आपदा प्रबंधन पर अपना ध्यान आकर्षित करना चाहिए। पशु चिकित्सा सेवा से

संबंधित विभाग में इस उद्देश्य के लिए एक अलग सेल की स्थापना की जानी चाहिए। इस विभाग द्वारा अपने समकक्षों के सहयोग से आपदा रोकथाम उपायों और तैयारियों का आयोजन किया जाना चाहिए।

संदर्भ :–

1. अमेरिकन वेटरनरी मेडिकल एसोसिएशन 2020 इ. खाद्य उत्पादन दवा पर COVID–19 का प्रभाव।
2. एंथनी, आर. 2004. जानवरों के प्रति सार्वजनिक संवेदनशीलता के माहौल में जोखिम संचार, मूल्य निर्णय और सार्वजनिक–नीति निर्माता संबंधरू ब्रिटेन के खुरपका और मुंहपका संकट पर फिर से विचार। जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल एंड एनवायरनमेंटल एथिक्स स्पेशल

सप्लीमेंट ऑन एग्रीकल्चरल क्राइसिस एपिजूटिक्स एंड जूनोसेस ऑन फार्म एनिमल्स 17.

3. अरलुके, ए., और सी. सैंडर्स. 1996. रिगार्डिंग एनिमल्स . फिलाडेल्फिया, पीएरू टेम्पल यूनिवर्सिटी प्रेस.

4. कैम्पबेल, आर., और टी. नोल्स। 2011. आपदा में पशुधन खोने के आर्थिक प्रभावरू विश्व पशु संरक्षण सोसायटी (डब्ल्यूएसपीए) के लिए एक रिपोर्ट। मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया, अर्थशास्त्री एट लार्ज।

5. डल्ला विला, पी., एस. काह्न, एन. फेरी, पी. मिगलियासिओ, एल. पोसेंटी, और जी. ब्रोएगिन्डेवे। 2017. आपदा प्रबंधन और जोखिम न्यूनीकरण में ओआईई की भूमिका। डे पाउला विएरा, ए., और आर. एंथनी। 2020. 2020 के दशक के लिए पशु कल्याण विज्ञान और नैतिकता के माध्यम से पशु चिकित्सा को फिर से तैयार करना। पशु (पशु चिकित्सा नैतिकता पर विशेष अंक)

6. डे पाउला विएरा, ए., वी. गुएस्डन, ए.एम. डे पासिले, एम. ए.जी. वॉन कीसरलिंगक, और डी.एम. वेरी। 2008. डेयरी बछड़ों में भूख के व्यवहारिक संकेतक। एप्लाइड एनिमल बिहेवियर साइंस 109रू 180दृ189।

7. हेन्स, आर. 2008. पशु कल्याण प्रतिस्पर्धी अवधारणाएँ और उनके नैतिक निहितार्थ । नीदरलैंड स्प्रिंगर।

8. हिको, ए., और जी. मालीचा। 2016. जलवायु परिवर्तन और पशु स्वास्थ्य जोखिम। जलवायु परिवर्तन और सतत विकास के लिए 2030 कॉर्पोरेट एजेंडा – स्थिरता और पर्यावरण न्याय में प्रगति 19, 77–111।

9. इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसिन। 2003. 21वीं सदी में सार्वजनिक स्वास्थ्य का भविष्य । वाशिंगटन, डीसी, नेशनल एकेडमीज प्रेस।

10. इरविन, एल. 2009. जहाज भरनारू आपदाओं में पशु कल्याण । फिलाडेल्फिया, पीएरू टेम्पल यूनिवर्सिटी प्रेस।